

**वरजिशी वि.** (फा.) शारीरिक व्यायाम में अभ्यस्त, कसरत में अनुभवी।

**वरण पुं.** (तत्.) 1. निश्चित कार्य के लिए वस्तु अथवा व्यक्ति के चुनाव का कार्य 2. विवाह हेतु वर का वधू को अथवा वधू का वर को अंगीकार करने का कार्य 3. पूजा, अर्चना, सत्कार।

**वरण-मख पुं.** (तत्.) स्वयंवर का आयोजन, कन्या विवाह हेतु उपस्थित व्यक्तियों में से एक का चयन।

**वरणमाला स्त्री.** (तत्.) व्यक्ति को पति के रूप में स्वीकार करते हुए, द्वाराचार के समय पहनाई जाने वाली माला, जयमाला।

**वरणी स्त्री.** (तत्.) मंगल कार्य हेतु पुरोहित अथवा होता को दिया जाने वाला उपहार अथवा दान।

**वरणीय वि.** (तत्.) वरण करने योग्य, निश्चित कार्य हेतु चयन के योग्य।

**वरद वि.** (तत्.) वर देनेवाला, आकांक्षा पूर्ण करने वाला, वरदाता।

**वरदक्षिणा स्त्री.** (तत्.) विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा दिए जाने वाले उपहार, दहेज।

**वरदमुद्रा स्त्री.** (तत्.) देवी, देवता अथवा किसी महात्मा का वरदान देने की स्थिति में उपस्थित रहना।

**वरदहस्त पुं.** (तत्.) 1. आशीर्वाद के लिए देने वाले का मंगलमय हाथ 2. संरक्षण वि. (तत्.) वर देने की हस्त-मुद्रा वाला।

**वरदा स्त्री.** (तत्.) वरदान प्रदान करने वाली, अभिलाषा स्वीकार करने वाली।

**वरदाचतुर्थी स्त्री.** (तत्.) माघ शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, इस दिन का व्रत, उपवास, मनोकामना सिद्धि कारक माना जाता है।

**वरदाता वि.** (तत्.) वर देने वाला, मनोकामना पूर्ण करने वाला।

**वरदात्री वि.** (तत्.) वर प्रदान करने वाली, मनोकामना पूर्ण करने वाली।

**वरदान पुं.** (तत्.) देवी, देवता अथवा किसी महात्मा द्वारा, वाँछित कार्यसिद्धि के लिए दिया गया आशीर्वाद, वर।

**वरदानी वि.** (तत्.) वरदान देने वाला अथवा देने वाली।

**वरदी स्त्री.** (देश.) आमतौर पर समान कार्य करने में व्यस्त व्यक्तियों का पहनावा जैसे- सैनिकों की वरदी अथवा विद्यार्थियों की वरदी, गणवेश, एक जैसा लिबास।

**वरन अव्य.** (तत्.) ऐसा नहीं, लेकिन, अपितु।

**वरना<sup>1</sup> स.क्रि.** (तत्.) वरण करना, निश्चित उत्तर दायित्व के लिए चयन, विवाह हेतु कन्या का पुरुष को चुनने का कार्य।

**वरना<sup>2</sup> अव्य** (देश.) नहीं तो, वर्ना।

**वरपक्ष पुं.** (तत्.) विवाह-समारोह में लड़के की तरफ वाले लोग, बराती, बरात के सदस्य।

**वरप्रद वि.** (तत्.) वर प्रदान करने वाला, वरद, मनोकामना पूर्ण करने वाला।

**वरप्रदान पुं.** (तत्.) वर देने का कार्य, आकांक्षा की पूर्ति।

**वरम पुं.** (फा.) शरीर के किसी अंग की सूजन, शोथ।

**वरमाला स्त्री.** (तत्.) विवाह उत्सव पर वर द्वारा वधू को और वधू द्वारा वर को पहनाई जाने वाली माला, वरणमाला, जयमाला।

**वरमुद्रा स्त्री.** (तत्.) देवी, देवता अथवा किसी महात्मा का वरदान देने की स्थिति में उपस्थित होना।

**वरयात्रा स्त्री.** (तत्.) गाजे-बाजे के साथ वर पक्ष के अतिथियों का वधू पक्ष के समारोह- स्थल की ओर प्रस्थान, बारात, बरात।

**वरयिता वि.** (तत्.) 1. वरण करने वाला 2. विवाह के लिए कन्या को चुनने वाला, कन्या का वरण करने वाला।